डा. शंकर वसंत मुदगल
एम्. ए., पीएच्. डी.
उपप्राचार्य, रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष,
स. भू. एस्. के. पाटील महाविद्यालय,
कुरुंदवाड, जिला कोल्हापुर.

* प्रमाण - पत्र *

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री याकुब मुबारक जमादार ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध - प्रंबध "भगवतीचरण वर्मा के 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । श्री याकुब मुबारक जमादार के प्रस्तुत शोध - कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

(डा. शंकर वसंत मुदगल)
शोध निर्देशक

कुरुंदवाड
दिनांक : 28 /जून /1995

* प्र ख्या प न *

यह लघु शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. के लघु शोध प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

गौरवाड

दिनांक : 28/ जून 1995

श्री याकुब मुबारक जमादार

शोध - छात्र

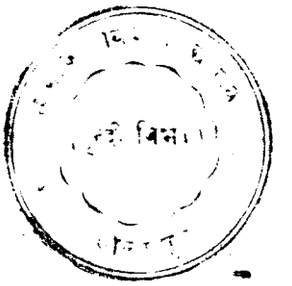

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

* प्र मा ण प त्र *

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु ✓ शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेसित किया जाए ।

दिनांक : 29/जून/1995

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

प्र स्ता व ना

* प्रस्तावना *

प्रेमचन्दो-तर हिन्दी साहित्य में जिन रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य को अपने योगदान से समृध्द किया ऐसे रचनाकारों में भगवतीचरण वर्मा एक हैं। कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण आदि विधाओं में उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' पुरस्कार से गौरवान्वित किया है। उनके 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास को 'साहित्य अकादमी' तथा अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

ऐसे इस महान रचनाधर्मी साहित्यकार का जन्म 30 अगस्त सन् 1903 में उ-तर प्रदेश में उन्नाव जिले के शफीपुर नामक गाँव में हुआ। आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के बीच आत्मविश्वास और हिम्मत के साथ खडे रहकर उन्होंने अपना जीवन यापन किया। अक्तूबर सन् 1981 में 78 वर्ष की उम्र में कर्करोग के कारण इस महान साहित्यकार की जीवन-यात्रा समाप्त हो गई। अपने जीवन-काल में उन्होंने हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अनेक मौलिक रचनाओं को जन्म दिया और अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

अनेक आलोचकों ने 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास की आलोचना की है और उसमें दोष दिखाये हैं। लेकिन हम उन्हीं से सवाल करना चाहेंगे कि, 'क्या नहीं है उनके इस उपन्यास में?' उसमें एक स्वस्थ जीवन-दर्शन है। विकृतियों से वितृष्णा और अच्छाई को अपनाने की प्रेरणा हैं।

जब शोध-प्रबंध के विषय चयन का समय आया तब मेरे सामने कोई निश्चित विषय नहीं था। मेरे सामने दो उपन्यासकार थे प्रेमचंद तथा भगवतीचरण वर्मा। मैं इस द्विधा मनःस्थिति में था कि इनमें से किस उपन्यासकार को चुना जाए। मैंने कई दिनों तक इस पर विचार किया। संयोगवश एक दिन मैं विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में किताबों को परख रहा था कि मेरे हाथ भगवती बाबू का 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास लग गया। मैंने उसे तुरन्त ले लिया और पढना आरम्भ किया। उपन्यास पढता गया -पढता गया और वह कब समाप्त हुआ इसका पता भी मुझे नहीं चला। इस उपन्यास ने मेरे अन्दर एक नई चेतना जगायी। मैंने उसी वक्त संकल्प किया कि मैं इसी उपन्यास को लेकर ही लघु-शोध-प्रबंध लिखूंगा।

एक दिन मैंने हमारे भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, (शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर) डा. वसंत मोरेजी से इस विषय के बारे में चर्चा की तो उन्होंने मुझे इसपर लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया। तब मेरा हौसला दुगुना हो गया। मैंने उसी दिन "भगवतीचरण वर्मा के 'भूले

बिसरे चित्र' उपन्यास का अनुशीलन" यह विषय निश्चित किया। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव मेरे श्रध्देय गुरु डा.शंकर वसंत मुदगलजी के सम्मुख रखा तो आपने भी इसे तुरन्त स्वीकृति दे दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत किया। प्रस्तुत शोध-प्रबंध के रुप में मेरा संकल्प साकार हुआ है।

'भूले बिसरे चित्र' के संदर्भ में स्वतंत्र रुप में शोधकार्य अब तक संपन्न नहीं हुआ है।

'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के अनुसंधान के प्रारम्भ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न निर्माण हुए थे।

1. क्या 'भूले बिसरे चित्र' में चित्रित भारतीय जीवन के चित्र यथार्थ तथ्यों पर आधारित हैं?
2. क्या उपन्यास का 'भूले बिसरे चित्र' शीर्षक उचित है?
3. क्या नवल का चरित्र आधुनिक युवा पीढी के लिए प्रेरणादायी है ?
4. क्या नवल के चरित्र में वर्माजी का व्यक्तित्व प्रस्तुत हुआ है?
5. उपन्यास के अन्त में वर्माजी किस दृष्टिकोण की स्थापना करना चाहते हैं?
6. क्या उपन्यास में महत् उद्देश की पूर्ति हुई है?

इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रुप में उपसंहार में दिए गये हैं।

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय :- भगवतीचरण वर्माजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन आवश्यक है। इस अध्याय में मैने वर्माजी के जीवन परिचय के अन्तर्गत पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, जीवन संघर्ष तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अन्तर्गत रचनाधर्मी साहित्यकार के रुप में भगवती बाबू की साहित्यिक रचनाओं का संक्षेप में सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास की कथावस्तु-

इस अध्याय में उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु देकर उसकी विशेषताओं की सम्यक चर्चा की है।

तृतीय अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में पात्र एवं चरित्र-चित्रण -

इसमें 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के पात्रों का परिचय प्रस्तुत है। उसके अन्तर्गत उपन्यास का नायक ज्वालाप्रसाद के साथ मुंशी शिवलाल, गंगाप्रसाद, नवल, विद्या इन प्रमुख पात्रों का विस्तृत तथा लक्ष्मीचन्द, ज्ञानप्रकाश, फरहतुल्ला, प्रेमशंकर, संतो, मलका, जैदेई, छिनकी आदि अनेक गौण पात्रों का सामान्य परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में कथोपकथन -

इसके अन्तर्गत 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में प्रयुक्त सभी प्रकार के कथोपकथनों की चर्चा करते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में देश-काल-वातावरण -

इस अध्याय में देश-काल-वातावरण का विवेचन प्रस्तुत किया है। देश-काल-वातावरण के अन्तर्गत मैंने तत्कालीन भारतीय जीवन को मद्देनजर रखते हुए उपन्यास में चित्रित समाज-जीवन का विवेचन किया है। इसके साथ-साथ उपन्यास में चित्रित स्थानगत तथा प्राकृतिक वातावरण की भी चर्चा की है।

षष्ठ अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास की भाषा शैली -

इस अध्याय में उपन्यास में प्रयुक्त भाषा शैली तथा उसके गुण और विशेषताओं को प्रस्तुत किया है।

सप्तम् अध्याय : 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास का उद्देश्य -

शोध-प्रबंध के इस अन्तिम अध्याय में 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास का महत् उद्देश स्पष्ट करते हुए उपन्यास में उद्घाटित विभिन्न समास्याओं और लेखन के संदेश को स्पष्ट किया है। इसके साथ-साथ लेखक के दृष्टिकोण का भी स्पष्टीकरण किया है।

उपसंहार :

इस शीर्षक के अन्तर्गत 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के अनुशीलन के निष्कर्षों की प्रस्तुति एवं उसके अनुसंधान से प्राप्त उपलब्धियों तथा अनुसंधान की नयी दिशाओं की ओर संकेत किया है।

परिशिष्ट (क) : इसके अन्तर्गत वर्माजी की जीवन-क्रमाणिका दी है।

(ख) संदर्भ ग्रंथ - सूची :

इस लघु-शोध प्रबंध के अन्त में इस शोध-प्रबंध में जिन-जिन संदर्भ ग्रंथों से सहायता ली है उन ग्रंथों की सूची दी गई है।

ऋण निर्देश :

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप में सहायता करने वाले

गुरुजनों, परिवार के सदस्यों तथा मेरे आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

यह लघु-शोध-प्रबंध श्रध्देय गुरुवर्य डा.शंकर मुदगल (उपप्राचार्य, रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, स.भू.एस.के.पाटील महाविद्यालय कुरुंदवाड, जि.कोल्हापूर) के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। उन्होंने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी समय-समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में अभिव्यक्त करना मेरे लिए असंभव है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा.पी.एस.पाटील से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में बार बार सुचनाएं प्राप्त हुअी हैं तथा अधिव्याख्याता डा.अर्जुन चव्हाण ने भी मुझे इस शोध कार्य में प्रोत्साहन दिया हैं। साथ ही एस्.के.पाटील महाविद्यालय के प्रा.राम महाडिक तथा श्री दत्त विद्यालय, नृसिंहवाडी के अध्यापक गोपाल सरदेसाई ने भी मुझे प्रोत्साहन तथा प्रेरणा दी है। उन सभी गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इस शोधकार्य की पूर्तता का बहुत बड़ा श्रेय मेरे परिवार के सदस्यों को है। मेरे आदरणीय, पूज्य पिताश्री, श्री मुबारक जमादार तथा श्रध्देय पूज्य माताश्री श्रीमती मासायबी की स्नेहमयी ममता सदैव मेरे साथ रही है। उनसे प्रेरणा पाकर ही मैं इस शोध क्षेत्र में पदार्पण करने का साहस कर सका। मेरे पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ है। परिवार के अन्य सदस्यों में मुझसे छोटे भाई रियाज का इस शोध प्रबंध की पूर्ति में मैं बहुत बड़ा योगदान मानता हूँ। उसने परिवार की जिम्मेदारी खुद अपने कंधों पर लेकर मुझे पारिवारिक उलझनों से दूर रखा। आरम्भ से अन्त तक उसने मुझे किसी बात की कमी महसूस होने नहीं दी। मेरे बड़े भाई आयुबजी, भाभी रमीजाबी, छोटा भाई लियाकत, बहन मिनाज, रियाज की पत्नी मिनाज जिन्होंने मुझे प्रस्तुत शोध कार्य में सदैव सक्रिय प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया है। उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे स्नेही मित्र बाबासाहेब वालके, व्यंकटेश चव्हान, जगन्नाथ तांदले, रियाज मुजावर, आझाद मुजावर, शब्बीर मोमेन आदि ने मुझे इस कार्य में प्रोत्साहित तथा हर संभव सहायता की है। उनको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा स.भू.एस.के.पाटील महाविद्यालय, कुरुंदवाड के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे संदर्भ-ग्रंथों को उपलब्ध कराया।

अंत में इस लघु-शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले श्री पंडीत सुतार, इचलकरंजी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।